8. चूहो! म्याऊँ सो रही है

घर के पीछे,
छत के नीचे,
पाँव पसारे,
पूँछ सँवारे।

देखो कोई,
मौसी सोई,
नासों में से,
साँसों में से।

घर घर घर घर हो रही है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

बिल्ली सोई,
खुली रसोई,
भरे पतीले,
चने रसीले।

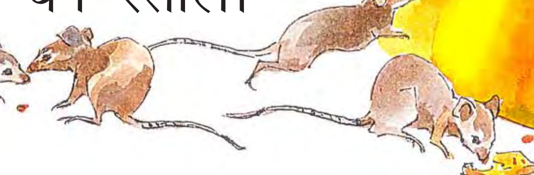

© NCERT not to be republished

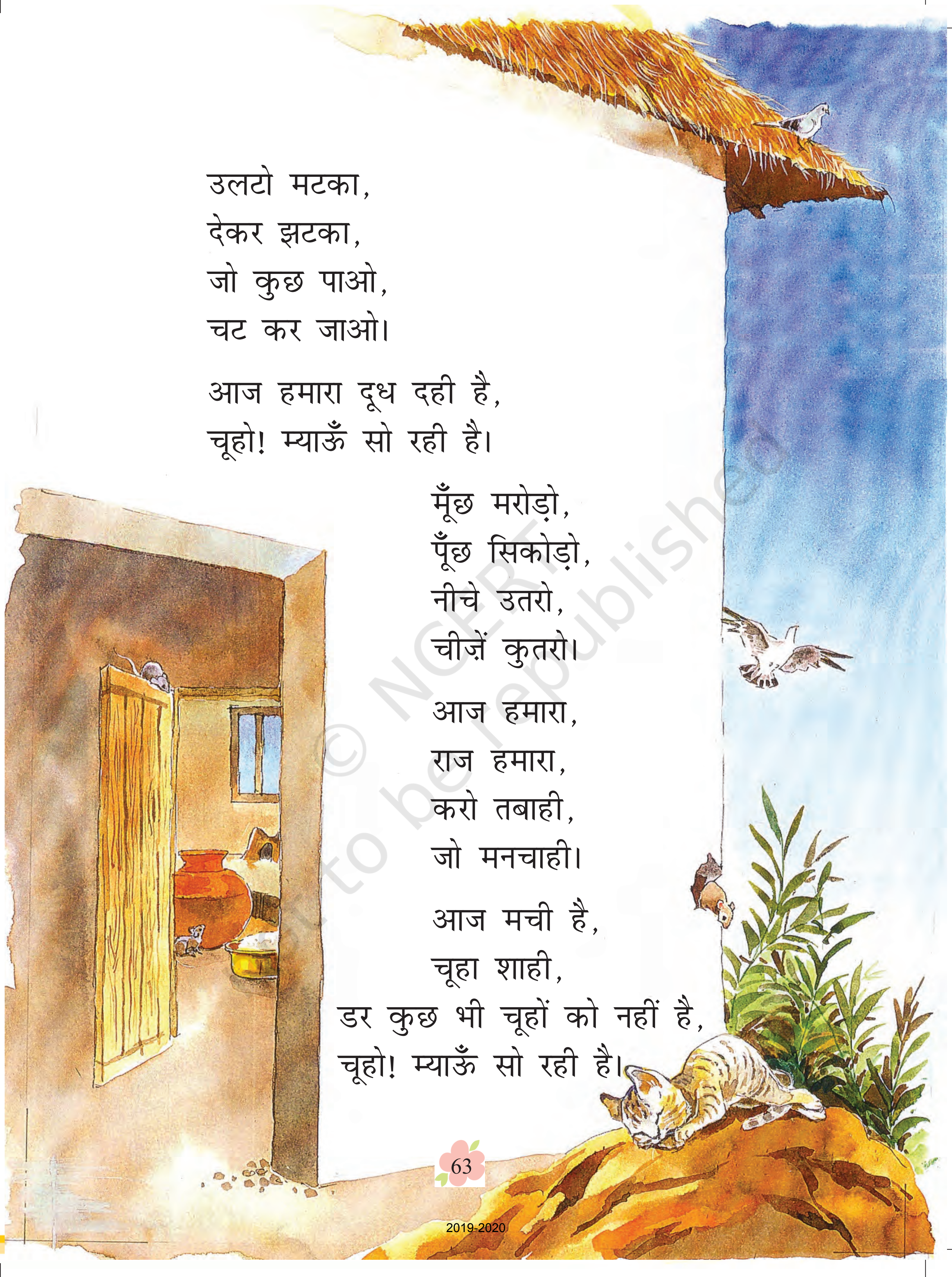

उलटो मटका,
देकर झटका,
जो कुछ पाओ,
चट कर जाओ।

आज हमारा दूध दही है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

मूँछ मरोड़ो,
पूँछ सिकोड़ो,
नीचे उतरो,
चीज़ें कुतरो।

आज हमारा,
राज हमारा,
करो तबाही,
जो मनचाही।

आज मची है,
चूहा शाही,
डर कुछ भी चूहों को नहीं है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

© NCERT not to be republished

पढ़ो

घर के पीछे,
छत के नीचे

पाँव पसारे,
पूँछ सँवारे

भरे पतीले,
चने रसीले

उलटा मटका,
देकर झटका

मूँछ मरोड़ो,
पूँछ सिकोड़ो

नीचे उतरो,
चीज़ें कुतरो

चलो, चूहा बनाएँ

तीन लिखो

मूँछ कान बनाओ

आँखें और
पैर बनाओ

पूँछ बनाओ

© NCERT
not to be republished

तुक मिलाओ, आगे बढ़ाओ

द उ

यह चित्र बिहार की मधुबनी शैली में बना है। इस चित्र की ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ।

मकड़ी-ककड़ी-लकड़ी

हमने तीन चीज़ें देखीं,
दादा तीन चीज़ें देखीं।

एक डाल पर थी इक मकड़ी,
लकड़ी पर बैठी थी मकड़ी,
मकड़ी खा रही थी ककड़ी।

लकड़ी, मकड़ी, ककड़ी,
मकड़ी, ककड़ी, लकड़ी,
ककड़ी, लकड़ी, मकड़ी।

© NCERT not to be republished

हमने तीन चीज़ें देखीं,
दादा तीन चीज़ें देखीं।

एक खेत में थी कुछ बालू,
बालू पर बैठा था भालू,
भालू खा रहा था आलू।

बालू, भालू, आलू,
भालू, आलू, बालू,
आलू, बालू, भालू।

© NCERT not to be republished